**UGC-CARE Listed** ISSN: 2349-4654

नाद-नर्तन जर्नल ऑफ डांस एण्ड म्यूजिक वर्ष : 10, अंक : 1, जून 2022

# पं. महोर सिंह के लोक गीतों का साहित्यिक विश्लेषण

**योगेश कुमार**

शोधार्थी, संगीत विभाग, महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय, रोहतक, हरियाणा

*Paper received on : December 4, January 10, March 7, April 25, May 06, Accepted on May 12, 2022*

## सार-संक्षेप

*प्रस्तुत शोध पत्र में पं. महोर सिंह का हरियाणा के लोक सांस्कृति पटल पर साहित्यिक योगदान दर्शाने का प्रयास किया जा रहा है। लोक संगीत एवं सांगीतिक परंपरा में पं. महोर सिंह ने अपनी लोक गायकी एवं लोक संगीत शैलियों के माध्यम से हरियाणा के लोक संगीत में अपना योगदान दिया है। पं. महोर सिंह हरियाणा के मुख्य संगीत विद्वानों में संगीतशास्त्र एवं संस्कृत भाषा के प्रकांड विद्वान थे। इन सभी का प्रमाण उनके भजनों में प्रयुक्त शब्दों से मिलता है। हरियाणा प्रदेश के अतिरिक्त अन्य प्रदेशों में उनके ज्ञान और अनुभव के कारण उन्हें विशिष्ट स्थान दिया जाता था। उन्हें पिंगल भाषा का अध्ययन भी किया और अपनी संपूर्ण कविताई पिंगल भाषा में की है। पं. महोर सिंह की लोक साहित्य की काव्यगत विविधता भी दृष्टिगोचर होती है। जिन्हें इस शोध पत्र में सम्मिलित किया गया है।*

**मुख्य शब्द :** लोक गीत, महोर सिंह, हरियाणा, साल्हावास, लोक गायकी

## शोध-पत्र

पंडित महोर सिंह का नाम हरियाणवी लोक साहित्य में बड़े आदर के साथ लिया जाता है। वे अपने युग के हरियाणवी बोली के लोकप्रिय कवि थे। उनका जन्म 3 दिसंबर 1869 को हरियाणा में स्थित झज्जर जिले के साल्हावास गाँव में हुआ था। उनके जन्म और कुल के बारे में वर्णन निम्नलिखित भजन में इस प्रकार मिलता है।

**टेक :** श्री कवि-कुल साल्हावास में, हुए महोर सिंह ब्रह्मजानी!
कवि रतिराम गौड़ पण्डितवर
मात रूक्मिणी देवी के घर
जन्मे महोर सिंह वाणीधर
सुन्दर शुभ अगहन मास में, प्रगटे करि कृपा भवानी!!
सन् अट्ठारह सौ उनहत्तर
पावन दिन था तीन दिसम्बर
सम्वत उन्नीस सौ छब्बीस वर
हर-हरि-विधि थे उल्लास में, दिन शुक्र अमावस जानी!![1]

उनके पिता का नाम पंडित रतिराम और माता का नाम रुक्मणि था। इनके पिता एक लोक प्रसिद्ध गायक थे। पं. महोर सिंह बचपन से ही कुशाग्र बुद्धि थे। वे अत्यंत प्रेमी स्वभाव के व्यक्ति थे। महोर सिंह जी की आरंभिक शिक्षा साल्हावास गाँव में (झज्जर गुरुकुल) सम्पन्न हुई। दर्शन और संगीत में उनकी गहरी रुचि थी। उन्होंने राजस्थान में चुरू और रामगढ़ जाकर आगे की पढ़ाई की। इसके अलावा उन्होंने हरियाणा में बेरी (झज्जर गुरुकुल) नामक स्थान पर भी शिक्षा ग्रहण की थी एवं उन्होंने जिन गुरुजनों से शिक्षा प्राप्त की उनका प्रमाण अपनी कविताई के माध्यम से स्वयं दिया है–

**''सूरजगढ़ मैं काया सेठ हुए लालचंद बलदेवदास**
**इनकी छतरी में मैंने पाँच वर्ष किया विद्याभ्यास,**
**'मुखरामजी' अध्यापक थे मैं पढ़ता था उनके पास,''**

वेदों एवं शास्त्रों की पढ़ाई के लिये वे बनारस (काशी) गये। वे प्रकांड पंडित थे। हरियाणवी लोक गायन में उनका कोई सानी नहीं था। जब पं. महोर सिंह और पं. शंकरदास जी के मध्य ग्राम बाधोत में बहुत बड़ा शास्त्रार्थ हुआ, तो अंत में पं. शंकरदास जी ने पं. महोर सिंह कि विद्वता को स्वीकार किया और उन्हें कवि शिरोमणि की उपाधि से अलंकृत किया। इसका वर्णन निम्नलिखित पंक्तियों में इस प्रकार है–

**''रतीराम आपके कुल में जन्मे महोर सिंह विज्ञानी,**
**ज्ञान समंदर अंदर जिसके बात नहीं कोई छानी,**
**पावन धरा बाघोत को नमन शत-शत बार,**
**अर्ज ईश से महोर सिंह जियो वर्ष हजार,**
**है कवि शिरोमणि सांख्य तेरी सब भरै आज सुण कानी,''**[2]

इसलिये उन्हें कवि शिरोमणि के रूप में जाना जाता है। इनके पूर्ण जीवन वृत्त के बारे में विद्वानों को अधिक ज्ञान नहीं हो पाया।

पं. महोर सिंह जी द्वारा रचित कुछ रचनाएँ प्राप्त होती हैं जिनके शीर्षक कुछ इस प्रकार है[3]–

नलदमयंती कथा, कर्ण पर्व, हनुमान जन्म, शिव पार्वती विवाह, अश्वमेध यज्ञ, विराट पर्व, महाभारत, कीचक वध, अधर छंद, लाक्षा गृह, द्रोपदी स्वयंम्वर, द्रोपदी चीरहरण, भीम-जयंत मल्ह युद्ध, शांति पर्व, चक्रव्यूह, गदा पर्व, राजा हंसध्वज, चंडी की कथा, वीर बभ्रुवाहन, दानवीर मोरध्वज, चंद्रहास कथा, हरिश्चंद्र कथा, उषा अनिरूद्ध प्रेम कथा, उत्तान पात, निर्गुण भजन, ब्रह्म ज्ञान के भजन।

## काव्यगत विशेषताएँ

पं. महोर सिंह के काव्य की सबसे बड़ी विशेषता है कि वह तात्कालीन जीवन से जुड़ा हुआ है। उन्होंने अपने भजनों के माध्यम से जाति एवं धर्म की संकीर्णताओं से ऊपर उठकर भक्ति के मार्ग को अपनाने की प्रेरणा दी है। उनके काव्य में, समाज में एकता स्थापित करने की भावना पर बल दिया गया है।

''अब तो सोच समझ के चाल गलती में जो कुछ बनी सो बनी'' उनके काव्यशास्त्रीय ग्रंथों से प्रतीत होता है कि वे रसवादी कवि थे। दर्शन शास्त्र, ज्योतिष, आयुर्वेद आदि का इनको पूर्ण ज्ञान था। महाकवि पंडित महोर सिंह एक रुचिसंपन्न व प्रतिभा संपन्न कवि थे। पं. महोर सिंह के शिष्य श्री मातादीन बताते हैं, ''इन्होंने अनेक काव्य ग्रंथों की रचना की। इनकी रचनाएँ हरियाणा, राजस्थान व पश्चिमी उत्तर प्रदेश में काफी लोकप्रिय मानी जाती हैं।''[4]

## सौंदर्य वर्णन

नायक नायिका का सौंदर्य वर्णन करने में कवि महोर सिंह को अकूत सफलता प्राप्त हुई। इनका सौंदर्य वर्णन स्थूल व मांसल न होकर अतीन्द्रिय था। इनकी रचनाएँ अश्लीलत्व दोष से मुक्त हैं। सहजता और सौम्यता इनकी रचनाओं का मूल मंत्र है। अपनी गरिमामयी अभिव्यक्ति में इन्होंने बहुत ही प्रांजल शब्दों का प्रयोग किया है।

पं. महोर सिंह की शिष्य परमपरा के पं. तोताराम अपने एक साक्षात्कार में कहते हैं, ''नख शिख वर्णन करते समय इन्होंने सामाजिक मर्यादाओं के दायरे का हमेशा ध्यान रखा। इनके सम्पूर्ण काव्य में सौंदर्य निरूपण की एक अलग ही महक विद्यमान है।''[5]

## वियोग सौंदर्य

इनके काव्य में विरह के मार्मिक चित्र उभर कर आये हैं। इनके विरह वर्णन में दीनता एवं व्याकुलता की गहन कूक है। इन्होंने अपने काव्य में विरह की दशा का वर्णन कुछ इस प्रकार किया है। जिसे पं. वेद प्रकाश से प्राप्त हुआ है।

**''तुम विदरभ देश का रास्ता बालम क्यों मोहे आज बताय रहे।**
**मैं जान गई तुम त्यागोगे बर बर यही वचन सुनाय रहे।**
**है विपत रोग की त्रिया औषधि वैदिक वाले गाय रहे।**
**पिया तुम भी चलो और मैं भी चलूँ**
**जो विद्रभ देश मन भाय रहे।**[6]

## वेदशास्त्रीय विवेचन

कवि महोर सिंह का वेदशास्त्रीय कवियों में प्रमुख स्थान है। इन्होंने प्रबंध काव्य ग्रंथों की रचना की है। अतः ये कवि की बजाय आचार्य अधिक प्रतीत होते हैं। वेदों का विशद अध्ययन इनकी काव्य कला में झलकता भी है। एक रचना दृष्टव्य है।

**'तेरा पालन करने हारि वेद में नौ माता बरनी।'**

## भक्ति और वैराग्य

कवि महोर सिंह के काव्य में ज्ञान, भक्ति और वैराग्य का अत्यंत गूढ वर्णन हुआ है। इनकी भक्ति में शांत रस का सुंदर परिपाक हुआ है। विशेषतः जीवन के अंतिम पड़ाव में इनमें भक्ति की भावना अधिक प्रगाढ़ हो गई थी। अपने जीवन के अनुभवों के आधार पर उन्होंने भक्ति और वैराग्य की बहुत सारी रचनाएँ लिखी। वे अपने मन को समझाते हुये लिखते हैं कि–

**''अरे मन जगह जगह मत भटकै. हरि भज एक ठिकाणे डट कै''**

प्रकृति चित्रण लोक कवियों की शृंखला में महोर सिंह जी ने प्रकृति का चित्रण पृष्ठभूमि के रूप में ही किया है। उन्होंने प्रकृति की छटा का सहजता से निरूपण करते हुए गाँव की सोंधी मिट्टी की महक के सजीव चित्र भावपूर्णता के साथ उकेरने का हर सम्भव प्रयास किया।

## भाषा शैली

कविवर महोर सिंह ने प्रायः पिंगल काव्य शैली को अपनाया है। अभिव्यक्ति व्यंजना कौशल में वे अद्वितीय है। इनकी भाषा में माधुर्य गुण विद्यमान है। अपनी काव्यभाषा में उन्होंने ब्रज प्रदेश में प्रचलित मन भावन शब्दों के अलावा तत्सम, तद्भव, देशज और हरयाणवी बोली के ग्रामीण शब्दों का बहुत ही सुंदर मिश्रण किया है। उनका शब्द कोश निश्चित ही काफी समृद्ध था। वे भाषा के पारखी होने के अलावा एक ऐसे विद्वान कवि थे जिनकी भाषा दोषहीन कही जा सकती है। पं. महोर सिंह ने शब्दालंकारों के साथ-साथ अर्थालंकारों का भी सफल प्रयोग किया है। दोहा, सोरठा, अरिल, सवैया, सांगीत, अधर छंद आदि इनके प्रिय छंद हैं। इनकी काव्य भाषा में लाक्षिणकता एवं व्यंजनात्मकता भी देखी जा सकती है। छंद शास्त्र पर कवि की गहरी पकड़ थी। चौधरी वीरेन्द्र सिंह जाखड़ के अनुसार, ''पंडित महोर सिंह हरियाणा के लोक कवियों में एक श्रेष्ठ कवि और गायक भी थे। उनकी आवाज में जादू था। अपनी सुरीली आवाज, ऊँचे सुर में गायन और पिंगल काव्य शैली की वजह से उन्होंने हरियाणा के लोगों के दिलों पर राज किया। भाव और भाषा दोनों दृष्टि से इनका काव्य उच्च कोटि का है। दुर्भाग्यवश यह लोक कवि आज तक उपेक्षित ही रहा।''[7]

यहाँ पं. महोर सिंह द्वारा रचित विविध धार्मिक विषयों पर आधारित कविताओं की भी रचना की जिसके कुछ उदाहरण निम्नांकित है–

### अरिलः (नल दमयंती)

**रानी नै दासी भेज महल में सती बुलवा लई,**
**बैठन को दीन्हा बैठना आदर से पास बैठा लई।**
**पूछी विखा की बात कही थोड़ी सी घनी दबा लई,**
**सुनकर बिखा का हाल महाराणी नै कंठ लगा लई।।**

### जकड़ीः (कर्ण पर्व)

टेक - हुया युद्ध आरम्भ शूरमा लड़न लगे।।
मोहरे मिले वीरता जागी, बाण धार जब बर्षण लागी,
खैंचत धनुष प्रत्यंचा भड़कैं, छूटैं बाण बिजली सी कड़कैं,
जिमी शलभाकेदल
चढ़ आये, ऐसे ही बाण गिगन में छाये,
भिड़ैं बाण झड़ैं, अगन पतंगे, दोनूं दलहो गये बिरंगें,
टूटैं रथ घोड़े मर जाते, कट ज्यां धनुष नहीं घबराते,
कटैं कवच सारथी मरैं हैं, फिर भी मारोमार करैं हैं,
कोई मूर्छित कोई घायल हो गया,
कोई बीर प्राणों को खो गया,
हो रहा जंग ढंग कतलामी, खपे शूरमा नामी ग्रामी-जी
तोड-कट कटकर भुज शीश धरण में पड़न लगे।।

### ख्याल (श्रीकृष्ण जन्म कथा)

मथुरापुरी जादूवंशी राजाओं की है रजधानी,
उग्रसेन जहाँ राज करै है हरि भक्त और महादानी।
उग्रसेन का छोटा भैया देवक युवराज है बानी,
अतिप्रेम दोनों भाइयों का हरिभक्ति मन में ठानी।
उग्रसेन कै पुत्र कंस था दुराचारी और अभिमानी,
देवक कै थी पुत्री देवकी, पति से यूँ बोली रानी।
समरथ पुत्री हो गई बलमा तन में झलक रही जवानी,
क्वाँरी कै रज होय महोर सिंह बिगड़ जायगी जिंद्रगानी।।

### जंगम (नल दमयंती कथा)

टेक - नल दमयंती को ढूँढन विप्र चले।।
कोई पूर्व को कोई पश्चिम को कोई उत्तर-दक्षिण को ध्याया,
कोई ईशान अग्नि नैऋत वायब विदिशाओं को मन ठाया,
कोई योगाभ्यासी गया पताल में कोई योगी नभ में पाया,
बन पर्वत नदी नाले को ढूँढ चल ग्राम शहर पुर में आया,
पूछत पूछत सब हार लिए फिरते फिरते थक गई काया,
तोड़-विप्र बृन्द को फिरते फिरते वर्ष कई मास टले।।

### सोहनी (कर्ण पर्व)

दोनों तरफ सजी धजी सेना खड़ी हैं चतुरंगिणी,
एक तरफ धृष्टद्युम्न दूजी तरफ सूतज़ दल धणी।
ओट के और चोट के अणी के और धार के,
हाथौं में जोध्या ले रहे हैं शस्त्र चार प्रकार के।
बाजे झुझाऊ बज रहे हैं शंखों की ध्वनि हो रही,
धनुषों की हो टंकोर बैठी मौत बाट संजो रही।
हाथी मारैं चिंघाड़ धर धर घोड़े भी हिणहिणा रहे,
दोनों तरफसे दूत लेले सन्देश आ रहे जा रहे।।

### चौताल एवं चौपैयाः (श्रीकृष्ण जन्म कथा)

टेक - रानी के बैन सुन देवक आया उग्रसेन के पास।।
चोताल- जद बोल्या देवक बैन बंधु उग्रसेन अरज है मेरी,
ब्याहण कै जोग हो गई सुता अब तेरी।
घर वर विद्या गुण रास करो तल्लाश चाहिये ना देरी,
दिन-दिन पुत्री होती जा रही बडेरी।।
चोपैया-रजो धर्म से हो ज्या क्वाँरी,
लगैगा दोष बड़ा भारी।
हों पतित पिता महतारी,
मर्जी अब रही तुम्हारी।।
उठत-सूरसेन का अंश, है जादू वंश, बोल उठा है कंस,
मनै घर वर कर लिया तल्लाश।।

### सांगीत (श्रीकृष्ण जन्म कथा)

टेक - राजाधिराज संसार में, कर्म फल भोगे जाते हैं।।
सां. - भासा है प्रपंच जगत स्वप्न की समान जान,
कोई ना किसी को मारै ऋणानू बंदी जहान,
कर्मो सेती मिलै आयु विद्या धन संतान, जी,
जन्म मरण देह का है जीव कभी मरता नाहीं,
भूल स्वरूप अपना अविद्या की पड़ी झाई,
कर्मो के अनुसार जीव मरते चौरासी माहीं, जी,
तोड़-मोह माया अहंकार में, बंधकर जाते आते हैं।।

उपरोक्त समस्त स्वरचित कविताएँ एवं अन्य कई रचनाएँ अत्यंत नवोयोग से गाते थे।

पं. महोर सिंह ने जीवन भर संगीत एवं साहित्य साधना और समाज सेवा की। 10 दिसंबर 1953 में उनका स्वर्गवास हो गया। सामाजिक योगदान और साहित्य साधना के मद्देनजर ग्राम पंचायत साल्हावास ने इस महान कवि की यादगार में समाधिस्थल (छतरी) का निर्माण करवाने के लिए पंचायती जमीन मुहैया करवाई थी। जिस पर उनके प्रिय पुत्र कवि पंडित चिम्मनलाल ने उनकी छतरी

(समाधि स्थल) का निर्माण करवाया था। आज भी उनके वंशज इस हरियाणवी लोक कला को संजोकर रखने में महती भूमिका का निर्वहन कर रहे हैं।

पं. महोर सिंह हरियाणा प्रदेश कि एक ऐसी महान हस्ति रही है, जिन्होंने सनातनी संस्कृति के संरक्षण में अहम योगदान दिया। पं. महोर सिंह ने धार्मिक एवं पौराणिक कथाओं को जन-साधारण की भाषा में बाँधकर आम जनता तक पहुँचाया, अपने बुद्धि बल एवं ज्ञान से निर्मित कई सैकड़ों भजनों के माध्यम से उन्होंने समाज को न्याय, नीति, धर्म का पाठ पढ़ाया उन्होंने अपने संगीतमय भजनों के माध्यम से समाज में फैली कुरीतियों एवं अंधविश्वास का कड़ा विरोध किया, अपने ब्रह्मज्ञान एवं चेतावनी भजनों के द्वारा इन्होंने समाज को अध्यात्मिक एवं अलौकिक तथा रहस्यमय चिन्तन के लिए उन्मुख किया।

पं. महोर सिंह के सडपौत्र श्री सत्यवान के अनुसार, ''पंडित महोर सिंह बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे। उनका व्यक्तित्व विराट था जो सदैव प्रेरणादायक रहेगा।[8] जहाँ हर वर्ष हरियाणा सरकार के द्वारा उनकी याद में सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन करवाया जाता है। कार्यक्रम की लाइव रिकॉर्डिंग पं. महोर सिंह जी के यूटयूब चैनल पर उपलब्ध है।

## सन्दर्भ ग्रन्थ सूची


1. पं. महोर सिंह के शिष्यों द्वारा उनकी पहली पुण्यतिथि पर गाया गया एक भजन, शोधार्थी द्वारा पं. महाबीर प्रसाद से साक्षात्कार के आधार पर संकलित तथ्य तिथि 26/03/2021
2. शर्मा, पूर्णचन्द, हरियाणवी सांगः एक परिशीलन, हरियाणा ग्रंथ अकादमी, पंचकूला, प्रथम संस्करण, पृ. 270
3. साक्षात्कार, पं. महाबीर प्रसाद पौत्र महोर सिंह, गुरुग्राम, 20 फरवरी 2021, 11:30 बजे
4. साक्षात्कार, श्री मातादीन, गुरुग्राम तिथि 20/03/2021, 12 :00 बजे
5. साक्षात्कार, पं. तोताराम जी (गाँव पुर), 27/04/2021, 13:00 बजे
6. साक्षात्कार, पं. वेद प्रकाश जी, गुरुग्राम तिथि 28/03/2021, 12:00 बजे
7. साक्षात्कार, चौधरी बीरेंद्र सिंह जाखड़, गाँव सालहावास 28.12.2020, 11:00 बजे
8. साक्षात्कार, सत्यवान, गुरुग्राम तिथि 26/11/2021, 14:50 बजे